सूरह — एक कहानी

सूरह अज़-ज़ुमर

गिरोह

पूरा सफ़र — सब से ज़्यादा उम्मीद वाली आयत —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 39 • 75 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

फ़'बुदिल्-लाह मुख़्लिसल्-लहुद्-दीन

2. तो अल्लाह की इबादत करो, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए।

यख़्लुक़ुकुम फ़ी बुतूनि उम्महातिकुम ख़ल्क़म्-मिम्-ब'अ्दि ख़ल्क़िन फ़ी ज़ुलुमातिन सलास

6. वो तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेटों में बनाता है, एक तख़्लीक़ के बाद दूसरी, तीन अंधेरों में।

क़ुल हल यस्तविल्-लज़ीन य'लमून वल्लज़ीन ला य'लमून

9. कहो: क्या जानने वाले और ना-जानने वाले बराबर हैं?

क़ुल या 'इबादियल्-लज़ीन अस्रफ़ू 'अला अन्फ़ुसिहिम ला तक़्नतू मिर्-रहमतिल्-लाह

53. कहो: ऐ मेरे बंदो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की, अल्लाह की रहमत से मायूस मत हो।

इन्नल्-लाह यग़्फ़िरुज़्-ज़ुनूब जमी'आ

53. बेशक अल्लाह सारे गुनाह बख़्श देता है।

व सीक़ल्-लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम इलल्-जन्नति ज़ुमरा

73. और जो अपने रब से डरे वो जन्नत की तरफ़ गिरोह-दर-गिरोह ले जाए जाएँगे।

ख़ालिस दीन अल्लाह का है

बेटा, ये सूरह अपनी मरकज़ी फ़िक्र का नाम ले कर खुलती है: '**फ़'बुदिल्लाह मुख़्लिसल्-लहुद्-दीन** — तो **अल्लाह** की इबादत करो, दीन को **उसी** के लिए **ख़ालिस** करते हुए — **अला लिल्लाहिद्-दीनुल्-ख़ालिस** — ख़बरदार, **अल्लाह ही के लिए ख़ालिस दीन है।**'

बेटा, '**अद-दीनुल-ख़ालिस**' — वो दीन जो **ख़ालिस** हो, बे-मिलावट। **लफ़्ज़ 'ख़ालिस' उस सोने के लिए इस्तेमाल होता है जिसमें कोई दूसरी धात न हो।**

और फिर अल्लाह उन लोगों का बहाना नक़्ल करते हैं जो उनके साथ दूसरों की इबादत करते हैं: '**मा न'बुदुहुम इल्ला लि-युक़र्रिबूना इलल्लाहि ज़ुल्फ़ा** — हम

उनकी इबादत सिर्फ़ इस लिए करते हैं कि वो हमें अल्लाह के **क़रीब** कर दें।'

बेटा, ग़ौर कीजिए — **मक्का के बुत-परस्त तक अल्लाह पर ईमान रखते थे। वो दहरिये न थे।** उनका दावा था कि **ये वसीले** उनकी ज़रूरतें ऊपर ले जाएँगे, उन वज़ीरों की तरह जो आपको बादशाह से मुलाक़ात दिलवाते हैं।

और अल्लाह का जवाब, बेटा, **तौहीद की बुनियाद है**: **वो ऐसे काम नहीं करते।** वो कोई दूर का शहंशाह नहीं जिसे आपका पैग़ाम पहुँचाने के लिए किसी दरबारी की ज़रूरत हो। जैसा वो और जगह फ़रमाते हैं, **वो शह-रग से भी क़रीब हैं** और पुकारने वाले को **सीधे** जवाब देते हैं।

और फिर, बेटा, अल्लाह की कोई औलाद न होने के बारे में ख़ालिस मंतिक़ का एक टुकड़ा: 'लौ अरादल्लाहु अंय्-यत्तख़िज़ वलदल्-लस्तफ़ा मिम्मा यख़्लुक़ु मा यशा — अगर अल्लाह औलाद बनाना चाहते तो जो वो बनाते हैं उस में से **जो चाहते चुन लेते** — **सुब्हानह** — वो **पाक** है — हुवल्लाहुल्-वाहिदुल्-क़ह्हार — वो अल्लाह है, **अकेला, ग़ालिब।**'

अंधेरों की तहें

फिर सूरह उनका हमें बनाना बयान करती है: 'ख़लक़कुम मिन नफ़्सिंव्-वाहिदतिन सुम्म ज'अल मिन्हा ज़ौजहा — उसने तुम्हें **एक जान** से बनाया, फिर उस से उसका जोड़ा बनाया।'

'**यख़्लुक़ुकुम फ़ी बुतूनि उम्महातिकुम ख़ल्क़म्-मिम्-ब'अ्दि ख़ल्क़िन फ़ी ज़ुलुमातिन सलास** — **वो तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेटों में बनाता है, एक तख़्लीक़ के बाद दूसरी, तीन अंधेरों में।**'

बेटा, '**ख़ल्क़म्-मिम्-ब'अ्दि ख़ल्क़**' — एक तख़्लीक़ के बाद दूसरी, **मरहला-दर-मरहला।** और '**तीन अंधेरे**' — उलमा ने इन्हें बढ़ते बच्चे को घेरते हुए **पर्दे** बताए, एक के अंदर दूसरा, **मुकम्मल अंधेरे में।**

बेटा, इस के साथ बैठिए: **आप मुकम्मल अंधेरे में बने, मराहिल में, आपके इल्म के

बग़ैर, एक ऐसे हाथ से जिसे आप देख न सकते थे।** और फिर आयत **वाहिद मा'क़ूल सवाल** पूछती है: 'ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम लहुल्-मुल्क — यही अल्लाह है, तुम्हारा रब; उसी की बादशाहत है — ला इलाह इल्ला हुव **फ़-अन्ना तुस्रफ़ून** — उसके सिवा कोई माबूद नहीं, **तो तुम कहाँ फेरे जाते हो?**'

'**इन तक्फ़ुरू फ़-इन्नल्लाह ग़निय्युन 'अन्कुम** — अगर तुम कुफ़्र करो, तो बेशक अल्लाह तुमसे **बे-नियाज़** है — **व ला यर्ज़ा लि-'इबादिहिल्-कुफ़्र** — मगर वो अपने बंदों के लिए कुफ़्र **पसंद नहीं** करता — **व इन तश्कुरू यर्ज़हु लकुम** — **और अगर तुम शुक्र करो, वो इसे तुम्हारे लिए पसंद करता है।**'

बेटा, उस आयत के अंदर **नरमी** महसूस कीजिए। **उन्हें आपसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं — और फिर भी वो नहीं चाहते कि आप ना-शुक्रे हों, और वो ख़ुश होते हैं जब आप उनका शुक्र अदा करें।** एक रब जो हर ज़रूरत से पाक, **जो फिर भी परवाह करता है कि आप कौन सा रास्ता लेते हो।**

वो जो रात को खड़ा होता है

'**अम्मन हुव क़ानितुन आना-अल्-लैलि साजिदंव्-व क़ाइमा** — क्या वो जो **रात** की घड़ियों में **फ़रमाँबरदार** है, **सजदा** करता और **खड़ा** रहता — **यह्ज़रुल्-आख़िरत व यर्जू रहमत रब्बिह** — **आख़िरत से डरता** और अपने रब की **रहमत की उम्मीद** रखता… (उस जैसा है जो ऐसा नहीं)?'

बेटा, रात को मोमिन की ये तस्वीर देखिए: **सजदा करता और खड़ा**, और उसके अंदर **दो चीज़ें एक साथ** — 'यह्ज़रुल-आख़िरह' (**ख़ौफ़**) और 'यर्जू रहमत रब्बिह' (**उम्मीद**)। **मोमिन दिल के दो पर, दोनों उसी नमाज़ में मौजूद।**

और फिर जो सवाल आता है वो चौदह सदियों से गूँजता रहा: '**क़ुल हल यस्तविल्-लज़ीन य'लमून वल्लज़ीन ला य'लमून** — **कहो: क्या जानने वाले और ना-जानने वाले बराबर हैं?** **इन्नमा यतज़क्करु उलुल्-अल्बाब** — सिर्फ़ अक़्ल वाले ही नसीहत लेते हैं।'

बेटा, ग़ौर कीजिए **सवाल का जवाब नहीं दिया गया** — क्योंकि जवाब इतना ज़ाहिर है कि उसे कहने की ज़रूरत नहीं। **और ये आयत हर उस तालिब-ए-इल्म का नारा बन गई जो कभी इस उम्मत में हुआ।**

क़ुरआन की सब से उम्मीद वाली आयत

और अब, बेटा, हम उस आयत पर आते हैं जिसके लिए ये सूरह सब से ज़्यादा महबूब है — **एक आयत जिसने बे-शुमार लोगों को मायूसी के किनारे से वापस खींचा।**

'**क़ुल या 'इबादियल्-लज़ीन अस्रफ़ू 'अला अन्फ़ुसिहिम** — **कहो: ऐ मेरे बंदो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की** — **ला तक़्नतू मिर्-रहमतिल्लाह** — **अल्लाह की रहमत से मायूस मत हो** — **इन्नल्लाह यग़्फ़िरुज़्-ज़ुनूब जमी'आ** — **बेशक, अल्लाह सारे गुनाह बख़्श देता है** — इन्नहू हुवल्-ग़फ़ूरुर्-रहीम।'

बेटा, इसे **लफ़्ज़-दर-लफ़्ज़** खोल कर देखिए, क्योंकि **हर लफ़्ज़ रहमत से चुना गया।**

'**या 'इबादी**' — **ऐ मेरे बंदो।** देखिए वो उन्हें कैसे मुख़ातिब करते हैं। **ये वो लोग हैं जिन्होंने अपनी ज़िंदगियाँ गुनाह से तबाह कर लीं — और वो फिर भी उन्हें 'मेरे बंदे' कहते हैं**, उन्हें मोहब्बत से अपनी तरफ़ मंसूब करते। **वो 'ऐ गुनहगारो' या 'ऐ मुजरिमो' नहीं कहते।**

'**अल्लज़ीन अस्रफ़ू 'अला अन्फ़ुसिहिम**' — जिन्होंने **अपने आप पर** हद से ज़्यादती की। बेटा, ग़ौर कीजिए: **गुनाह को एक ऐसी चीज़ बताया गया जो तुमने ख़ुद पर की। तुमने अल्लाह का नुक़सान नहीं किया; तुमने अपनी ही जान को ज़ख़्मी किया।** वो गुनहगार को यूँ बयान करते हैं जैसे आप उस शख़्स को बयान करें जो ख़ुद को तकलीफ़ पहुँचाता रहा हो।

'**ला तक़्नतू मिर्-रहमतिल्लाह**' — **मायूस मत हो।** '**क़ुनूत**' यहाँ उम्मीद का **मुकम्मल ख़त्म** होना है, ये नतीजा कि **अब ख़त्म है**, कि तुम बचाए जाने

से परे हो। बेटा, **अल्लाह इसे मना करते हैं। मायूसी आजिज़ी नहीं — ये अल्लाह की रहमत के बारे में बुरा गुमान है, और ये ख़ुद एक गुनाह है।**

'**इन्नल्लाह यग़्फ़िरुज़्-ज़ुनूब जमी'आ**' — अल्लाह **सारे** गुनाह बख़्शते हैं। **सारे**, बेटा। *'छोटे गुनाह'* नहीं। *'ज़्यादातर गुनाह'* नहीं। उलमा अगली आयतों से और पूरे क़ुरआन से समझी जाने वाली **शर्त** ज़िक्र करते हैं: **तौबा के साथ।** **लौट आओ, और तुम्हारे रिकॉर्ड पर कोई गुनाह नहीं जो मिटाया न जा सके। एक भी नहीं।**

इब्ने अब्बास (रज़ि0) और दूसरों ने कहा **ये आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जिन्होंने सब से संगीन जुर्म किए थे** — क़त्ल, शिर्क — और डरते थे कि उनके लिए कोई वापसी का रास्ता नहीं। **और अल्लाह ने उतारा: मायूस मत हो।**

बेटा, समझिए ये इतनी मायने क्यों रखती है। **शैतान की दो चालें हैं।** गुनाह से पहले: *'ये छोटा है, अल्लाह रहीम हैं।'* **गुनाह के बाद**: *'तुम ख़त्म हो, तुम मुनाफ़िक़ हो, अब नमाज़ का कोई फ़ायदा नहीं।'* **दोनों जाल हैं। दूसरी ने पहली से ज़्यादा लोगों को तबाह किया, क्योंकि जो मायूस हो जाता है वो कोशिश छोड़ देता है।**

और ग़ौर कीजिए **ठीक उसके बाद क्या आता है**, बेटा: '**व अनीबू इला रब्बिकुम व अस्लिमू लहू मिन क़ब्लि अंय्-य'तियकुमुल्-'अज़ाब** — और अपने रब की तरफ़ **लौटो** और उस के आगे झुक जाओ **अज़ाब आने से पहले।**' **तो दावत की एक मी'आद है। बे-हद रहमत, महदूद वक़्त।**

और फिर सूरह उस शख़्स का पछतावा दर्ज करती है जिसने देर की: '**अन तक़ूल नफ़्सुंय्-या हस्रता 'अला मा फ़र्रत्तु फ़ी जम्बिल्लाह** — कहीं कोई जान ये न कहे: **हाय अफ़सोस उस पर जो मैंने अल्लाह के मुआमले में कोताही की!**'

बेटा, '**या हस्रता**' — हाय मेरा ग़म। **उस आयत को आहिस्ता पढ़िए, क्योंकि ये पहले से की गई एक रिकॉर्डिंग है उन अल्फ़ाज़ की जिन्हें कहने वाला आप नहीं बनना चाहते।**

उन्होंने उसकी सही क़द्र न की

फिर सूरह अल्लाह की अज़मत को एक ऐसी तस्वीर में बनाती है **जो दिल को रोक देती है**: '**व मा क़दरुल्लाह हक़्क़ क़द्रिह** — और **उन्होंने अल्लाह की सही क़द्र न की** — **वल्-अर्ज़ु जमी'अन क़ब्ज़तुहू यौमल्-क़ियामह** — जब कि **पूरी ज़मीन** क़ियामत के दिन **उस की मुट्ठी** में होगी — **वस्-समावातु मत्विय्यातुम्-बि-यमीनिह** — और **आसमान** उसके **दाएँ हाथ** में **लपेटे** हुए होंगे।'

बेटा, हम इसे उसी तरह तस्लीम करते हैं जैसे अल्लाह ने बयान किया, **बिना 'कैसे' पूछे और बिना उन्हें उनकी मख़लूक़ से तशबीह दिए।** और **ये तस्वीर हमारे पैमाने के एहसास को ठीक करने के लिए है**: ये ज़मीन, अपने समुंदरों और बर्र-ए-आज़मों और **हर उस सल्तनत के साथ जिसने कभी किसी को डराया — एक मुट्ठी में थामी। ** आसमान, हर उस चीज़ के साथ जो इल्म-ए-फ़लकियात ने कभी नापी — **एक तूमार की तरह लपेटे हुए।**

बेटा, '**व मा क़दरुल्लाह हक़्क़ क़द्रिह**' — उन्होंने अल्लाह का **अंदाज़ा वैसा न किया जैसा करना चाहिए।** **यही हर गुनाह की जड़ है: अल्लाह का एक सुकड़ा हुआ तसव्वुर। हम ना-फ़रमानी करते हैं क्योंकि, उस लम्हे, वो इतने छोटे लगे कि उन की ना-फ़रमानी की जा सके।**

'व नुफ़िख़ फ़िस्-सूर फ़-स'इक़ मन फ़िस्-समावाति व मन फ़िल्-अर्ज़ि **इल्ला मन शा-अल्लाह** — और सूर फूँका जाएगा, तो जो आसमानों और ज़मीन में है वो **बे-होश** हो कर गिर जाएगा **सिवाए उस के जिसे अल्लाह चाहे** — सुम्म नुफ़िख़ फ़ीहि उख़्रा फ़-इज़ा हुम क़ियामुंय्-यन्ज़ुरून — फिर वो **दोबारा** फूँका जाएगा, तो अचानक वो **खड़े, देख** रहे होंगे।'

'**व अश्रक़तिल्-अर्ज़ु बि-नूरि रब्बिहा** — **और ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी** — व वुदि'अल्-किताब — और **रिकॉर्ड** रख दिया जाएगा — व जी-अ बिन्-नबिय्यीन वश्-शुहदा — और अंबिया और गवाह लाए जाएँगे — **व क़ुज़िय

बैनहुम बिल्-हक़्क़ि व हुम ला युज़्लमून** — और उनके दरमियान **सचाई** से फ़ैसला किया जाएगा, **और उन पर ज़ुल्म न होगा।**'

गिरोह-दर-गिरोह ले जाए गए

और अब, बेटा, वो मंज़र जो इस सूरह को उसका नाम देता है — **और दो आमद के दरमियान का फ़र्क़ एक वाहिद ग़ायब लफ़्ज़ में सिमट गया है।**

'**व सीक़ल्-लज़ीन कफ़रू इला जहन्नम ज़ुमरा** — और जिन्होंने कुफ़्र किया वो जहन्नम की तरफ़ **गिरोह-दर-गिरोह ले जाए** जाएँगे — **हत्ता इज़ा जा-ऊहा फ़ुतिहत अब्वाबुहा** — **यहाँ तक कि जब वो उस तक पहुँचेंगे, उसके दरवाज़े खोले जाएँगे।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **वो पहुँचते हैं, और फिर दरवाज़े खुलते हैं।** वो बाहर खड़े इंतिज़ार करते हैं, और दरवाज़े उनके सामने खोले जाते हैं। और दरोग़े कहते हैं: 'अ लम य'तिकुम रुसुलुम्-मिन्कुम — क्या तुम्हारे पास **तुम्ही में से** रसूल नहीं आए?'

और अब दूसरी तरफ़ देखिए, बेटा — और **एक लफ़्ज़ पर ध्यान रखिए**: '**व सीक़ल्-लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम इलल्-जन्नति ज़ुमरा** — और जो अपने रब से डरे वो **जन्नत** की तरफ़ **गिरोह-दर-गिरोह** ले जाए जाएँगे — **हत्ता इज़ा जा-ऊहा व फ़ुतिहत अब्वाबुहा** — यहाँ तक कि जब वो उस तक पहुँचेंगे — **और उसके दरवाज़े (पहले ही) खोले जा चुके होंगे** — व क़ाल लहुम ख़ज़नतुहा **सलामुन 'अलैकुम** तिब्तुम फ़द्ख़ुलूहा ख़ालिदीन — और उसके निगहबान उनसे कहेंगे: **तुम पर सलामती हो!** तुम पाक हुए, तो इस में दाख़िल हो जाओ, हमेशा के लिए।'

बेटा, **वो अरबी का एक छोटा सा 'व' — 'और' — ही पूरा फ़र्क़ है।** जहन्नम वालों के लिए: *पहुँचे, **फिर** दरवाज़े खुले।* जन्नत वालों के लिए: *पहुँचे, **और दरवाज़े पहले ही खुले हुए थे।***

एक क़ैदी दरवाज़े के खुलने का इंतिज़ार करता है। एक मेहमान के लिए दरवाज़ा पहले से खुला रखा जाता है।

और मेहमानों का इस्तिक़बाल किन अल्फ़ाज़ से होता है? '**सलामुन 'अलैकुम**' — वही सलाम जो आप हर रोज़ अपने भाइयों को कहते हैं, **अब फ़रिश्तों की ज़ुबान पर, जन्नत के दरवाज़े पर।**

और उनका जवाब: '**अल्-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी सदक़ना व'अ्दहू व औरसनल्-अर्ज़** — सारी तारीफ़ अल्लाह की जिसने हमसे किया अपना **वादा सचा** किया और हमें ये ज़मीन **वारिस** में दी — नतबव्व-उ मिनल्-जन्नति हैसु नशा — हम जन्नत में जहाँ चाहें ठिकाना बनाएँ — **फ़-नि'म अज्रुल्-'आमिलीन** — तो **क्या ही अच्छा है अमल करने वालों का अज्र!**'

बेटा, **वो सारी उम्र नमाज़ पढ़ते और सब्र करते रहे, और उस लम्हे उनका पहला जुमला 'अल्हम्दुलिल्लाह' है।** न शिकायत, न हिसाब — **सिर्फ़ तारीफ़।**

और सूरह की आख़िरी लाइन, बेटा, वहीं ख़त्म होती है जहाँ हर चीज़ ख़त्म होती है: '**व क़ीलल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन** — **और कहा जाएगा: सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए, जहानों के रब के लिए।**'

इस सूरह से क्या सीखा

1. दीन 'ख़ालिस' होना चाहिए — बिल्कुल उस सोने की तरह जिसमें कोई दूसरी धात न हो; और वो कोई दूर का बादशाह नहीं जिसे वसीले चाहिएँ।

2. आप तीन अंधेरों में, मरहला-दर-मरहला बनाए गए — 'तो तुम कहाँ फेरे जाते हो?'

3. उन्हें आपकी ज़रूरत नहीं, फिर भी वो आपके शुक्र से ख़ुश होते हैं — ये एक रब की परवाह है, मोहताजी नहीं।

4. ख़ौफ़ और उम्मीद एक ही नमाज़ में — यही रात को खड़े होने वाले मोमिन की तस्वीर है।

5. 'ला तक़्नतू' — मायूसी आजिज़ी नहीं, अल्लाह के बारे में बुरा गुमान है; और शैतान की दूसरी चाल पहली से ज़्यादा तबाह-कुन है।

6. हर गुनाह की जड़ ये है कि 'उन्होंने अल्लाह की सही क़द्र न की' — एक सुकड़ा हुआ तसव्वुर।

7. जहन्नम वाले पहुँचते हैं **फिर** दरवाज़े खुलते हैं; जन्नत वाले पहुँचते हैं **और** दरवाज़े पहले से खुले होते हैं — क़ैदी और मेहमान का फ़र्क़।

या अल्लाह, हमारा दीन ख़ालिस कर दीजिए, हमें कभी अपनी रहमत से मायूस मत होने दीजिए, और हमें उन में शामिल फ़रमाइए जिनके लिए दरवाज़े पहले से खुले होंगे। आमीन।